Sanskrit (Honours)
B.A. (IInd Part)

डॉ० सन्तिमी [illegible]
अतिथि [illegible]
आर. सी. एस. कॉलेज, मंगोलैन,
बेगूसराय

लघुसिद्धान्तकौमुदी
(समासः)

पूर्व में बताया गया है कि स्वरान्त शब्दों की साधनिका जो पुँल्लिंग हैं, का वर्णन आचार्य वरदराजकृत 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के अजन्तपुँल्लिंग में हुआ है। इसी क्रम से 'राम' शब्द के सम्बोधन में 'हे राम!' को साधित किया गया है। इसी प्रकार 'हे रामौ' एवं 'हे रामाः' की भी प्रथमा विभक्ति के साधक सूत्रों के सहयोग से साधित किया जाता है।

(सूत्र) अमि पूर्वः - 'अको ऽम्यचि पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्' अर्थात् अक् (अ, इ, उ, ऋ, लृ) से अम् सम्बन्धी अच् (स्वर) यदि पर में हो तो 'पूर्व' और 'पर' के स्थान में पूर्वरूप एकादेश होता है।

इस सूत्र से 'अम्' प्रत्यय या आदेश पर में रहने पर 'दीर्घ' या

यण्' आदि की प्रक्रिया नहीं होती ; इस लिए
के वर्ण के अनुरूप ही 'अम्' के 'अ' को
जाता है। जिससे 'रामम्' या 'हरिम्' आदि रूप
सिद्ध हो जाते हैं।

रामम् : सार्थक 'राम' शब्द की 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' सूत्र से 'स्वौजसमौट्....' सूत्र के अनुसार द्वितीया विभक्ति एक वचन में 'अम्' प्रत्यय होने पर 'राम + अम्' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त होने की स्थिति में इस सूत्र को बाधित कर 'अमि पूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप होने पर 'रामम्' यह रूप सिद्ध होता है।

Rukmani Ram

— क्रमशः —